an>

Title: Regarding CBI inquiry on all the incidents of atrocities on Dalits in Bihar.

श्री चिराग पासवान (जमुई) : अध्यक्ष महोदया, मैंने मनुस्मृति नहीं पढ़ी है और न ही समझना चाहता हूं कि 'ताड़न का अधिकारी' किसे कहें?

माननीय अध्यक्ष : मनुस्मृति में ऐसा कुछ नहीं है।

श्री चिराग पासवान: ऐसी मानसिकता जो कि कान में गरम शीशे को घोलकर डालने की रही हो, उसमें जारी संघर्ष में मैं इस सदन का संरक्षण जरूर चाहूंगा।

मैडम स्पीकर, हम इसे कैसी सामाजिक घटना कहें, जिसमें आज भी दलितों को जबरन पकड़ कर उन पर यूरिनेट किया जाता है और उसके बाद भी जो उसमें अपराधी हैं, वह खुलेआम घूमते हैं क्योंकि शासन और प्रशासन की उन्हें शह प्राप्त होती है। वह शासन और प्रशासन जिनके पास दूसरे राज्यों में हो रहे दलित उत्पीड़न के लिए घड़ियाली आंसू बहाने का तो समय है, लेकिन खुद अपने राज्य बिहार में ठीक नाक के नीचे हो रहे दलितों के दमन की उनको कोई फिक्र नहीं है।

मैडम स्पीकर, पिछले बुधवार, 20 जुलाई की यह घटना है, मुजफ्फरपुर के पारू प्रखंड के बाबूटोला में दो दलित युवक राजीव और मुन्ना को जबरन पकड़ कर उनको एक कमरे में बांध कर चोरी का गलत इलज़ाम कबूलवाने के लिए उनको जबरन एक कमरे में बांध कर घंटों पीटा गया और उसके बाद उनके साथ जो किया गया, वह मैं इस सदन में पुनः दोहराना नहीं चाहता हूं। हमारे राÂष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रामविलास पासवान खुद वहां पीड़ितों से मिलने गए थे। इसी तरह की एक घटना किशनगंज के बहादुरगंज में हमने देखी। वहां एक दलित परिवार को सिर्फ इसलिए पीटा गया क्योंकि वह विवाद 2 डिसमिल जमीन से जुड़ा हुआ था और इसमें महिलाओं तक को वहां पीटा गया। इसी तरीके की घटना हमने पिछले हफ्ते दरभंगा के मानी-गाची टोले में हमने देखी, जहां एक दलित मां-बेटी के साथ अभद्र व्यवहार किया गया।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप सभी दलितों का विÂषय उठा रहे हैं और वह भी तो वही कर रहे हैं।

श्री चिराग पासवान: मैडम स्पीकर, मैं जानना चाहता हूं कि देश की लगभग 20 करोड़ की दलित आबादी मदद के लिए किसकी ओर देखे? मैं इस प्रश्न का उत्तर इसलिए भी चाहता हूं कि पिछले 25 सालों का इतिहास गवाह रहा है कि हमारे प्रदेश बिहार में एक के बाद एक बड़े दलित नरसंहार हुए हैं और उसके बाद तमाम आरोपी बरी होते रहे हैं। क्रूरतम अमानवीय घटनाएं हुई हैं, जिसके बाद घड़ियाली आंसू तो बहाए गए हैं और मुजफ्फरपुर जैसी घटना इस बात का प्रमाण है कि अभी भी दलित उत्पीड़न बेरोकटोक वहां चल रहा है।

13.00 hours

महोदया, मैं सदन का ध्यान 1996 की बटानी टोला की घटना की ओर दिलाना चाहता हूं, जहां 21 दलितों को सुनियोजित तरीके से मार दिया गया था। उसके ठीक बाद 1997 में लक्ष्मणपुर बाथे की घटना है, जिसमें 58 दलितों को मार दिया गया था। उसके बाद 2000 में मियापुर की घटना है, जिसमें 32 दलितों को मौत के घाट उतार दिया गया। मैं ये बातें सदन में इसलिए रख रहा हूं, क्योंकि उस वक्त भी राज्य में वही लोग सरकार में थे, वही दल सत्ता में था, जो आज भी सत्ता में है। यह मामला हाईकोर्ट पहुंचा, लेकिन राज्य सरकार ने इसकी पैरवी में इतनी कोताही बरती कि हाईकोर्ट पहुंचते-पहुंचते तमाम आरोपी रिहा कर दिये गये।

मैं अंत में आपसे सिर्फ इतना ही आग्रह करना चाहता हूं कि दलितों की किस तरीके से अनदेखी की जाती है, इसका एक अभी हाल का एक ताजा उदाहरण हमारी राज्य सरकार ने दिया, जब उन्होंने लगभग 90 ज्यूडिशियल ऑफिसर्स की नियुक्ति की, जिनमें से एक भी दलित नहीं है। आजादी के सात दशकों के बाद भी 149 सैक्रेट्री लैवल पदों में से एक भी पद किसी भी दलित के पास नहीं है। यह अपने में दर्शाता है कि इसके पीछे मुजफ्फरपुर जैसी घटनाओं को अंजाम देने वाली मानसिकता ही दोÂषी है।

इसलिए महोदया बिहार में हुई इन तमाम घटनाओं की मैं आपके माध्यम से सी.बी.आई. जांच की मांग करता हूं और अंत में इतना ही कहना चाहूंगा कि हम हार मानने वालों में से नहीं हैं, हम डरने वालों में से नहीं हैं, परंतु हां, इस मानसिकता के खिलाफ अपने अधिकार की लड़ाई में इस सदन से सहयोग की अपेक्षा जरूर रखता हूं। धन्यवाद। ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : राजेश जी, आप एसोसिएट कर दीजिए।

â€¦(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : श्रीमती नीलम सोनकर, श्रीमती प्रियंका सिंह रावत, श्रीमती अंजू बाला, श्रीमती वीना देवी, श्री अरविंद सावंत, श्री श्रीरंग आप्पा बारणे, डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे, कुंवर पुÂष्पेन्द्र सिंह चन्देल, डा.किरीट सोलंकी, डा.मनोज राजोरिया, श्री शरद त्रिपाठी, श्रीमती मीनाक्षी लेखी, श्री वंदूकांत खैरे एवं श्री भैरों प्रसाद मिश्र को श्री चिराग पासवान द्वारा उठाए गए विÂषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।

श्री राजेश रंजन (मधेपुरा) : अध्यक्ष महोदया, इस घटना के होने पर मैं खुद श्री रामविलास पासवान जी के साथ गया था। मैं कहना चाह रहा हूं कि जो बात श्री चिराग पासवान ने उठाई कि आजादी के 70 सालों के बाद हिंदुस्तान में जो 24 प्रतिशत दलित हैं, यह सवाल उन दलितों, ओबीसी, समाज के वंचितों पर ही क्यों उठता है? उस पक्ष के लोग यदि तालियां बजाते हैं तो मैं यह पूछना चाहूंगा और आग्रह करना चाहूंगा कि निश्चित रूप से उन्हें ताली बजानी चाहिए। लेकिन यह बहुत गम्भीर मामला है। चाहे वह किशनगंज का मामला हो...(व्यवधान) अध्यक्ष जी, आपने उन्हें इतना समय दिया है तो मुझे भी एक मिनट का समय और देने की कृपा करें। मेरा आपसे आग्रह है कि जो घटना घटी है, इसके अलावा दरभंगा और किशनगंज की घटना भी है। मुजफ्फरपुर की घटना अमानवीय है। मैं आपको बता दूं कि दो बच्चों को लाकर जबरदस्ती उनकी मुंह को खोलकर उन्हें पेशाब पिलवाया गया। मेरा सवाल यह है कि केरल और कर्नाटक के बारे मे भी अभी चर्चा हो रही थी। मैं कहना चाहता हूं कि लगातार दलितों पर ही ये जुल्म क्यों बढ़ते जा रहे हैं? क्या इससे पूरे देश में गृह युद्ध की स्थिति खड़ी नहीं हो रही है? देश में दलितों को केन्द्र बिन्दु बनाकर उत्तर प्रदेश में जो घटना घटी है। मेरा आपसे आग्रह है कि उत्तर प्रदेश में दो जातियों के बीच खड़ा करके हिंदुस्तान को जलाने का प्रयास हो रहा है। इसके अलावा औरत, महिलाओं और बेटियों को सामने लाकर राजनीति करने का प्रयास हो रहा है। ये पोलिटिशियंस इसके लिए दोÂषी हैं। इसलिए हमें गंभीरता से सोचना चाहिए कि दलित कैसे सम्मानित हों और उन्हें कैसे न्याय मिले। धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष : इसमें कोई पोलिटिक्स न करे तो अच्छा रहेगा।